Jai Ambe Gauri Aarti

जय अम्बे गौरी आरति

जय अम्बे गौरी,
मैया जय श्यामा गौरी,
तुमको निशिदनि ध्यावत,
हरि ब्रह्मा शिवरी। 1 |

मांग सिंदूर विराजत,
टीको मृगमद को,
उज्ज्वल से दोउ नैना,
चंद्रवदन नीको॥ 2 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

कनक समान कलेवर,
रक्ताम्बर राजै,
रक्तपुष्प गल माला,
कंठन पर साजै॥ 3 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

केहरि वाहन राजत,
खड्ग खप्पर धारी,
सुर-नर-मुनजिन सेवत,
तनिके दुखहारी॥ 4 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

कानन कुण्डल शोभति,
नासाग्रे मोती,
कोटकि चंद्र दिवाकर,
सम राजत ज्योती॥ 5 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

शुंभ-निशुंभ बिदारे,
महिषासुर घाती,
धूम्र विलोचन नैना,
निशिदनि मदमाती॥ 6 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

चण्ड-मुण्ड संहारे,
शोणित बीज हरे,
मधु-कैटभ दोउ मारे,
सुर भयहीन करे॥ 7 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

ब्रह्माणी, रूद्राणी,
तुम कमला रानी,
आगम निगम बखानी,
तुम शिवि पटरानी॥ 8 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

चौसठ योगनिी मंगल गावत,
नृत्य करत भैरों,
बाजत ताल मृदंगा,
अरू बाजत डमरू॥ 9 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

तुम ही जग की माता,
तुम ही हो भरता,
भक्तन की दुख हरता,
सुख संपतकिरता॥ 10 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

भुजा चार अतशिोभति,
खडग खप्पर धारी,
मनवांछति फल पावत,
सेवत नर नारी॥ 11 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

कंचन थाल वरिाजत,
अगर कपूर बाती,
श्रीमालकेतु में राजत,
कोटरितन ज्योती॥ 12 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

श्री अंबेजी की आरत,ि
जो कोइ नर गावे,
कहत शविानंद स्वामी,
सुख-संपतपिावे॥ 13 |
॥ॐ जय अम्बे गौरी...॥

जय अम्बे गौरी,
मैया जय श्यामा गौरी,
तुमको नशिदनि ध्यावत,
हरर ब्रह्मा शविरी। 14 |